12

तैयार का महत्व

(यूहन्ना 16)

''ये बातें मैं ने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और मुझे जानते हैं। परन्तु ये बातें मैं ने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था: और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है? परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम्हारे मन शोक से भर गए। तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा''
(आयतें 16:1-7)।

प्रेरितों के साथ यीशु की चर्चाओं का एक उद्देश्य उन कठोर वास्तविकताओं के लिए तैयार करना था जो उनके सामने झूल रही थीं। उसके शब्द इस कहावत से मेल खाते हैं जिसका इस्तेमाल आज आमतौर पर किया जाता है: ''चौकस होने का अर्थ हथियारबन्द होना है।'' अगले दिन प्रेरितों के उत्साह की परख होनी थी, पर अगले कई सालों तक ऐसा नहीं होना था। उन्हें त्वरित के साथ-साथ दीर्घकालीन प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। यीशु की मृत्यु और जी उठने में संसार को बल देना था और प्रेरितों को एक अलग भूमिका में रखना था। यह बातें होने पर शैतान ने मसीहियत के विनाश के लिए नये प्रयास किए (प्रकाशितवाक्य 12:17), जिसमें प्रेरितों ने नेतृत्व की एक नई स्थिति में कदम रखना था जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

यीशु को मालूम था कि उसके प्रेरितों के लिए उसकी बातें निराश करने वाली और उलझन में डालने वाली हैं। इस सच्चाई के बावजूद यह आवश्यक था कि वह उन्हें उन अंधकार भरे दिनों के लिए तैयार करे, जो शीघ्र ही उन पर आने वाले थे। उसे विशेष रूप में यह मालूम था कि वह अपने पिता के पास अपने जाने की बात करके उनके मैम्बरों को शोकित कर रहा था, पर उनके लिए यह साफ़-साफ़ चर्चा थी।

जो कुछ उसने इन प्रेरितों से कहा वह तैयारी के मूल्य और महत्व में वह प्रकाशमान करता है। वह अपने नमूने के द्वारा हमें याद दिलाता है कि अन्धकार के दिनों के लिए बिना तैयारी के किसी भी मसीही को भविष्य में जाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अपनी पृष्ठभूमि के रूप में उसके शब्दों का इस्तेमाल करते हुए आगे देखते हैं कि विश्वास को बनाने और विश्वास को मज़बूत करने के लिए उपयुक्त तैयारी की आवश्यकता थी।

मज़बूती

पहले हम देखते हैं कि तैयारी हमें आने वाले कठिन समयों के लिए मज़बूत करती है। यीशु ने कहा कि वह अपने चेलों के साथ बातचीत इसलिए कर रहा था कि परीक्षाएं आने पर उन्हें निराशा न हो:

> ''ये बातें मैं ने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और मुझे जानते हैं ''(16:1-3)।

आने वाले दिनों में जब उन्हें सताव की आग का सामना करना था, चाहे यह उनके प्रियजनों द्वारा उनका बहिष्कार करना या जेलोतेसों के हाथों मृत्यु का सामना, उन्हें कहे गए यीशु के शब्दों ने उन्हें ''ठोकर लगने'' से बचाना था। ''ठोकर'' (*skandalizo*) के लिए उसके द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द का अर्थ है ''कही गई बात या किए गए काम से किसी को क्रोध और/या आघात लगने का कारण बनना।'' यह वही शब्द है जिसका इस्तेमाल उसने 6:61 में किया। यूहन्ना ने लिखा, ''यीशु ने अपने मन में यह जानकर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उनसे पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?''

यीशु अपने प्रेरितों को हर आवश्यक जानकारी दे रहा था ताकि जब उनके ऊपर परीक्षाएं आएं तो वे चकित होकर दिल न छोड़ें। उन्होंने भविष्य के उस भाग के रूप में जो यीशु ने उनके लिए नापा था अपनी कठिनाइयों को समझना था।

यही बात आज हमारे लिए सच है। 2 तीमुथियुस 3:12 के अनुसार सताव वह लड़ाई, जिसमें हर मसीही को जीतना है। परीक्षाओं का सामना होने पर हमें ठोकर नहीं खानी चाहिए, क्योंकि पवित्र शास्त्र में हमें समय से पहले चिता दिया है कि वे आएंगी। परमेश्वर के वचन का अध्ययन हमें पक्का करता है ताकि इन परीक्षाओं से हम ठोकर न खाएं बल्कि मज़बूत हों।

स्मरण

दूसरा, हम देख सकते हैं कि तैयारी हमें अतीत में पाई गई आशिषों को याद रखने की स्थिति में रखती है। यीशु ने कहा कि वह उन्हें आने वाली इन कठिनाइयों के बारे में बता रहा है ताकि एक दिन उन्हें याद आए कि जब वह यहां था तो वह उनकी रक्षा कैसे करता था। उसने कहा:

> परन्तु ये बातें मैं ने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था: और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
>
> अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है? परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम मन शोक से भर गए (16:4-6)।

प्रेरितों को याद आना था कि उन्हें यह बताने के लिए कि उसकी और उनकी कौन प्रतीक्षा कर रहा है, उसने अपनी मृत्यु से पहले तक प्रतीक्षा की। इस समय तक वह उनकी ऐसी

कठिनाइयों से रक्षा करने के योग्य रहा था। वह उन्हें वैसे प्रेरित बनाने की तैयारी करते हुए जैसे वह चाहता था कि वे बनें उसने उन्हें भविष्य की बातें बताकर परेशान नहीं करना चाहा। बाद में जब उनके ऊपर कठिनाइयां आईं तो उन्हें याद आया कि उसने उनके साथ रहते हुए किस प्रकार से कुछ परीक्षाओं में उनकी रक्षा की।

भविष्य के लिए उपयुक्त तैयारी होने पर, जो कुछ वह उसे देखकर हमें आनन्द करने का अवसर मिलेगा। हम याद कर सकते हैं कि हमें किस प्रकार से तैयार किया गया है या हम ने योजनाएं किस प्रकार से बनाई हैं ताकि उसके आने पर हम बेहतर और अधिक लाभदायक भूमिका निभा सकें। यह पीछे को देखना हमारे मनों को आशीषित करता है।[1]

मसीह के इन्हीं शब्दों को बदलते हुए हम कह सकते हैं, ''धन्य है वह व्यक्ति जिसका अतीत उदार और अनुग्रहकारी है कि कठिन और परेशानियों भरे भविष्य का सामना करने पर वह पीछे मुड़कर देख सकें।'' मेरे डैड को जब यह समझ आने लगा था कि उनकी शारीरिक समस्याएं इतनी अधिक हैं कि वे अधिक देर तक जीवित नहीं रह सकते, तो उन्होंने कहा, ''मैंने बड़ा अच्छा जीवन निभाया है, उस सारे आनन्द के लिए जो मैंने लिया है मैं बड़ा आभारी हूं।'' उन्हें पीछे मुड़कर देखने और पिछली बातों को याद करने के लिए शान्ति और सामर्थ मिलती है। प्रेरित भी उन से अलग नहीं थे। कठिन, भयंकर सताव के दिनों में भी उनका याद करना कि यीशु उनके साथ कितना अनुग्रहकारी था, उनके लिए शान्ति और स्थिरता देने वाला था।

तैयारी

तीसरा, यह स्पष्ट है कि तैयारी हमें आने वाली उन अच्छी बातों के लिए तैयार करती है। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि उनके लिए पवित्र आत्मा पाने के लिए उसका उन से दूर जाना आवश्यक है। उसने कहा, ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (16:7)।

यीशु इन प्रेरितों के लिए परमेश्वर की योजना को अंजाम दे रहा था। यह एक तेजस्वी और दूरगामी योजना थी। हां पीड़ा और सताव आने थे, उनके भविष्य में अलग प्रकार का जीवन और अलग जिम्मेदारियां थीं पर एक बड़ा, अद्‌भुत ''लाभ'' अर्थात पवित्र आत्मा उन्हें मिलने वाला था।

हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर सदैव वह परमेश्वर है जो हमारे आगे चलता है। वह न केवल यह बताता है कि हमें कहां जाना चाहिए और क्या करना चाहिए बल्कि वह हमें उधर जाने में जहां हमें जाना है अगुआई भी करता है और उसे करने के लिए जो हमें शक्ति चाहिए वह भी देता है। जब हम कल वे चाहते हैं तो हमें मिलेगा कि परमेश्वर हमारे आने के लिए अपनी तैयारियों के साथ वहां पहले से है और हमारे लिए तैयार की गई भूमिकाओं को निभाने के लिए हमारी राह देख रहा है। उसने न केवल हमें परिस्थितियों के लिए तैयार किया है बल्कि उसने हमारे लिए परिस्थतियों को भी तैयार किया।

प्रेरितों के लिए बड़े तनाव के इस पल में यीशु ने उनके मनों में पवित्र आत्मा से भरे होने के का अच्छा विचार डाला। आत्मा की सामर्थ ने उन्हें वे सब बातें याद दिला देनी थीं जो उन्हें बताई

गई थीं और उन नई सच्चाइयों को उनके दिमाग में डालना था जिन्हें जानने और सिखाने की उन्हें आवश्यकता थी (14:26)। इन प्रेरितों के लिए ये प्रतिज्ञाएं इतनी तसल्ली वाली थीं और हमारे लिए ऐसे ही अहसास कितने ही तसल्ली देने वाले हैं! हम कल की चिन्ता क्यों करें? हम जानते हैं कि परमेश्वर इसमें हमारे साथ जाएगा और हम जानते हैं कि वह हमारे लिए काम का आधार बनाने के लिए पहले से वहां है। वह अपने मिशन को पूरा करने के लिए हमारी राह देख रहा है!

सारांश

सिद्ध अगुवे के रूप में यीशु ने मसीहियत की स्थापना में अपने प्रेरितों को उनकी भूमिकाओं के लिए सिद्धता से तैयार किया। यीशु के ऊपर उठाए जाने के उन आरम्भिक वर्षों से बढ़कर हमारे लिए और चुनौती भरे समयों की कल्पना करना कठिन है। परम्परा से हमें पता चलता है कि (यदि यहूदा को न गिना जाए और मत्तियाह को गिना जाए) कि ग्यारह के ग्यारह प्रेरित बेशक हिंसक और दर्दनाक मौत मरे। यहां तक कि यहून्ना भी जिसे हम मानते हैं कि वह बुढ़ापे में मरा, कह पाया, ''मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश, और राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के बचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में था'' (प्रकाशितवाक्य 1:9)।

यीशु प्रेरितों को उस सब के लिए जो शीघ्र ही उन पर आने वाला है कैसे तैयार कर पाया? उसने उन्हें उनके मनों को ठोकर लगने के विपरीत मज़बूत किया, याद रखने के लिए उनके मनों को प्रेरणा दी, और आत्मा में सेवा के लिए उनकी आत्माओं को तैयार किया। हम उसके वचन को मान लें ताकि वह हमें ऐसी किसी भी बात को जो हमारे लिए कल जो परमेश्वर ने तैयार की है वैसे ही उसका सामना कर सकते हैं।

''क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं'' (2 तीमुथियुस 4:6-8)।